Godda College, Godda

Name of the teacher	Course	Sem	Subject		Mode
Dr. Pankaj Kumar	B.Ed	II	T.C-201	Variables involved in teaching task	pdf

P. Kumar
07/05/2020

T.C-201
Unit-3

Variables involved in teaching task:
(शिक्षण कार्य में शामिल चर):-

शिक्षण प्रक्रिया में तीन प्रकार के चर प्रयुक्त हैं:-

(i) स्वतंत्र चर (Independent variable) (शिक्षक)
(ii) आश्रित चर (Dependent variable) (छात्र)
(iii) मध्यस्थ चर (हस्तक्षेप चर) (Intervening or Mediating variables) (पाठ्यक्रम)

(i) स्वतंत्र चर (Independent variable) - शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक, स्वतंत्र चर के रूप में कार्य करते हैं। वे छात्रों को अधिगम-अनुभव प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं।

(ii) आश्रित चर (Dependent variable) - शिक्षण प्रक्रिया में छात्र को आश्रित चर की संज्ञा दी गई है क्योंकि शिक्षण प्रक्रिया में नियोजन, व्यवस्था व प्रस्तुतीकरण के अनुसार ही उसे सक्रिय रूप से कार्य करना पड़ता है।

(iii) मध्यस्थ हस्तक्षेप चर (Intervening variable) - शिक्षण प्रक्रिया में पाठ्यवस्तु, शिक्षण विधियाँ, शिक्षण युक्तियाँ तथा व्यूह रचनाएँ आदि हस्तक्षेप चर के वर्ग में आते हैं। ये सभी चर शिक्षण प्रक्रिया में हस्तक्षेप करते हैं। अर्थात सभी चर मिलकर शिक्षण प्रक्रिया को पूर्ण बनाने का प्रयास करते हैं।

Scanned with CamScanner

Function of Teaching variables :-
(शिक्षण चरों के कार्य)

शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक तथा छात्र (स्वतंत्र एवं आश्रित चर) इन्हीं चरों के माध्यम से निम्नांकित कार्य करते हैं! –

(i) Diagnostic function (निदानात्मक कार्य)
(ii) Prescriptive function (~~अपचारात्मक कार्य~~ उपचारात्मक कार्य)
(iii) Evaluate function (मूल्यांकन कार्य)

(i) Diagnostic function (निदानात्मक कार्य) –

निदानात्मक कार्य में शिक्षक (स्वतंत्र चर) अधिक क्रियाशील रहते हैं। वे छात्र एवं पाठ्यवस्तु दोनों पर विशेष ध्यान रखते हैं। शिक्षक इस बात का निदान करते हैं कि छात्रों को क्या-क्या आना चाहिए। और छात्रों को क्या-क्या आता है। इस प्रकार शिक्षक का मुख्य उद्देश्य छात्रों को नया ज्ञान से परिचय करना होता है। नया ज्ञान प्रदान करने के लिए शिक्षकों को कुछ कार्य करने होते हैं :-

⇒ छात्रों को क्या-क्या आता है और उनको कहाँ-कहाँ पर कठिनाई होती है। नैदानिक परीक्षाएँ इसमें सहायक सिद्ध होती हैं।

⇒ पाठ्य-वस्तु का विश्लेषण करके उसे इस प्रकार पुनर्व्यवस्थित करते हैं कि वह छात्रों के लिए बोधगम्य हो जाये।

Scanned with CamScanner

⇒ छात्रों के पूर्व ज्ञान के आधार पर पाठ्य-वस्तु को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत कर उन्हें नया ज्ञान प्रदान करते हैं।

⇒ वे अपने शिक्षण को पूरा करने के लिए अपने व्यवहार में अपने क्षमता के अनुसार वांछित सुधार लाते हैं।

इस प्रकार स्वतंत्र चर (शिक्षक) शिक्षणात्मक कार्यों में बहुत सक्रिय रहते हैं वही छात्र भी (आश्रित चर) के व्यवहार को कम करके नहीं आंका जा सकता है वे भी क्रियात्मक कार्य में अपने तरफ से सक्रिय रहते हैं।-

⇒ छात्र (आश्रित चर) अपने प्रविष्ट व्यवहार के आधार पर अपने कमजोरी एवं अपने शक्ति का निर्धारण करते।

⇒ छात्र अपना मूल्यांकन अपने अधिगम के मेतो जैसे - भाषा, सोचने, समझने की क्षमता एवं मनोवैज्ञानिकता के आधार पर करते हैं।

⇒ वे विषय वस्तु एवं निर्देशित सामग्री को अपने उपयोग के लिए उपयोग करते हैं।

(ii) Prespective function (अथवा उपचारात्मक कार्य)-

निदान के माध्यम से जो लक्षण, स्तर अथवा कमियाँ शिक्षक को मालूम होती हैं, उन पर नियंत्रण रखने तथा उनका उपचार करने का कार्य भी शिक्षकों को ही करना पड़ता है। अच्छे शिक्षक उपचार करने के लिए अनेक युक्तियों और विधियों का प्रयोग छात्रों की प्रकृति, पूर्वज्ञान आदि

को ध्यान में रखते हुए करते हैं। अथवा उपचारात्मक कार्यों के द्वारा शिक्षक अपने शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है साथ-ही साथ छात्रों में वांछित परिवर्तन भी लाते हैं। उपचारात्मक क्रियाओं के तत्व इस प्रकार हैं!-

⇒ उचित विषय वस्तु का चुनाव करना एवं उसे निश्चित क्रम में व्यवस्थित करना

⇒ शिक्षण कौशल का उचित प्रयोग करना

⇒ पृष्ठ पोषण की समुचित व्यवस्था करना।

उपचारात्मक क्रियाओं में शिक्षक (स्वतंत्र चर) सक्रिय रूप से कार्य करते हैं। वे आवश्यकतानुसार छात्रों (आश्रित चर) से कभी-कभी सहायता लेते हैं। उपचारात्मक क्रियाओं में उद्देश्य प्राप्त करने के लिए अपनाये जाने वाले चरों में तालमेल बैठाकर उन्हें वांछित उपचार के लिए प्रयुक्त किया जाता है। यह कार्य कक्षा के अन्दर किया जाता है।

(iii) Evaluate function (मूल्यांकन कार्य) -
मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। इसका उद्देश्य उपचारात्मक कार्यों की प्रभावशीलता के विषय में जानना है। इसके माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जाता है कि छात्रों में वांछित परिवर्तन हुआ है या नहीं।

Scanned with CamScanner

प्राप्त हुआ है तो किस सीमा तक। मूल्यांकन उद्देश्य पर निर्भर रहता है। यह शिक्षक को बताता है कि उसके द्वारा निश्चित किये गये उद्देश्य कहाँ तक पूरे हुए हैं। मूल्यांकन के लिए शिक्षक विभिन्न प्रकार के प्रविधियों का प्रयोग करता है तथा परीक्षणों का निर्माण करता है।

मूल्यांकन क्रियाओं के उपक्षेप पद (Intervening variable) में निम्नांकित पद अधिक महत्वपूर्ण हैं -
- मानदण्ड की स्थापना के पद
- व्यवहार परिवर्तन का आकलन
- निदानात्मक पद.

शिक्षण चरों के कार्य

- **निदानात्मक कार्य**
  - शिक्षण समस्या का विश्लेषण
  - छात्रों के पूर्वज्ञान का निर्धारण
  - व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान
  - पाठ्य सामग्री विश्लेषण
- **उपचारात्मक कार्य**
  - शिक्षण के लिए उचित विषयवस्तु का चुनाव
  - शिक्षण कौशल, नीति एवं युक्ति का चुनाव
  - पृष्ठपोषण की व्यवस्था
- **मूल्यांकन कार्य**
  - मानदण्ड परीक्षा की स्थापना
  - व्यवहार परिवर्तन का आकलन
  - निदानात्मक पद